© AJH 2022 | Vol. 04, Issue 04, October – December 2022

ANSH – Journal of History

ISSN (Online) No. 2582 -046X

Peer-Reviewed, Refereed & Open-Access International Journal of History

लोक साहित्य में आहुवा ठिकाने की शौर्य-गाथा

वीर सिंह, शोद्यार्थी इतिहास विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय उदयपुर,

डॉ पंकज अमेटा, शोध निर्देशक इतिहास विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय उदयपुर

सारांश:-

जोधपुर रियासत का आहुवा ठिकाना दोहरी ताजिमयुक्त सिरायत ठिकाना था। जिसके ठाकुर को अव्वल दर्जा एवं न्यायिक अधिकार प्राप्त थे। राठौड़ रियासत जोधपुर में महाराजा के संरक्षक,सलाहकार,प्रधानमंत्री एवं प्रमुख सेनापति का दायित्व अधिकतर समय तक आहुवा ठिकानेदारो ने निभाया था। आहुवा के ठिकानेदारो ने शासन-प्रशासन, युद्ध के मैदान,संस्कृति-संरक्षण और अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस कारण आहुवा ठिकाने का इतिहास स्वर्णिम,गौरवशाली एवं उज्जवल रहा है। अतः लोक-साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा गीत, दोहा,छंद, सोरठा कवित, मरसिया इत्यादि में प्रचुर मात्रा में आहुवा के ठिकानेदारो के सुजस एवं कीर्ति का उल्लेख किया गया है। साथ ही साथ डिंगल एवं पिंगल साहित्य में आहुवा ठिकाने के शौर्यमय एवं पराक्रमी पुरुषार्थ का सांगोपांग क्षत्रियोंचित वर्णन बहुतर मिलता है।

Keywords:

आहुवा, शौर्य के दोहे, काव्य पद, गीत

पृष्ठभूमि

राजस्थान की भूमि राजपूती शौर्य, बलिदान, त्याग, वीरता, पुरुषार्थ, धैर्य, संयम, साहस, सर्वस्व-न्यौछावर एवं सती-साध्वी, देवता, संत-जनों की लीला स्थली रही है। इसी क्रम में मारवाड़ के राठौड़ों का पराक्रम, स्वाभिमान, राष्ट्र-धर्मरक्षण, दान-शीलता, स्वकर्तव्यपालन के लिए जीवन आत्मसमर्पण करने का आदर्श चरित्रोयुक्त गौरवशाली इतिहास रहा है। इसी कारण से किसी कवि ने कहा है:-

बल हट बंका देवड़ा, किरतब बंका गोड़ ।

हाड़ा बंका गाढ़ में, रणबंका राठौड़ ॥ 1

इसी नव कोटि मारवाड़ के सोजत परगना में आहुवा ठिकाना (जिला- पाली) है। जिस पर राठौड़ कुल की चांपावत शाखा, रावचांपा के वंशजों का आधिपत्य रहा है। आहुवा के चांपावत राठौड़ों के गौरवमयी उज्जवल इतिहास की झलक लोक साहित्य में प्रचुर दिखाई देती है।

चांपा के पौत्र एवं भैरवदास के पुत्र जैसा ने आहुवा को बसाया। जैसा भैरवदासोत मालदेव के प्रधानमंत्री, प्रमुख सलाहकार एवं परम-विश्वासपात्र व्यक्ति थे।2 खानवा के युद्ध में बाबर के विरुद्ध सांगा के पक्ष में जैसा जी ने युद्ध में भाग लिया और घायल हुए। जैसा जी के 52 सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। 3

बाबर रिण घमासांण, खेत बयाना खग बायो।

मंगल करें बखांण, ओ इसो जैसो आयो।।

काली करे कलोल, सूर मन भारी भै छायो।

जैसा रिण रै मांय, भैरव कहे भड़ भयो ।।

शेरशाह सूरी की मृत्यु के पश्चात, जैसाजी ने 1545 में भागेसर शाही थाना को जीता और स्वयं घायल हुए । फिर जैसाजी ने एक महीने में मारवाड़ के नागेसर, मंडोर, फलोदी, पोकरण आदि स्थानों में शेरशाह के 21 थानों पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट किया।4

सूरशाह पतशाह रै, गी मुरधर गुमराह ।

भागेसर थाणो भंजे, ते बाली जैयशाह ।।

मोटा राजा उदय सिंह के समय चारणों ने आहुवा में धरणा दिया । आहुवा के गोपाल दास ने धरनार्थियों को शरण, भोजन, अंतिम संस्कार, चिकित्सा व्यवस्था इत्यादि का निर्वहन किया । इसी संदर्भ में गोपाल दास चाम्पावत की कीर्ति के लिए, लोक साहित्य में यह कवित्त प्रसिद्ध है ।

सर गांगा विआं साथ, दाग गोपाल दिराऔ ।

जिका अकत जीवया, कमध निर्वाह करायो।

राम, बलू ,आसकरण, तिकै कर बैठा टालौ।

पाता पख गोपाल, रयो चाम्पावत रूखालौ।।

आउवै पत धर राखी अंखण्ड, छत्री चारण नातो छतां ।

इलां छतें रहसी अमर, कीरत गुणियन मुख कथां ।।5

महाराजा अजीत सिंह के समय नागौर के मोहकम सिंह ने जालौर पर कब्जा कर लिया, तब तेज सिंह आहुवा ने युद्ध किया, चेहरे के दाहिनी तरफ तीन तीर लगे, घायल हुए, इन्हीं घावों के कारण उनकी मृत्यु हुई और उनके 10 सैनिक भी मारे गए।6

सह दूजो संसार, माटी रो घडियो मरद ।

तोनूं तो किरतार, तन रो घड़ियों तेजसी ।।

महाराजा अभयसिंह के अहमदाबाद अभियान में कुशल सिंह आहुवा हरावल में सर्वप्रथम शत्रु पर आक्रमण करने वालों में थे । कुशल सिंह ने शत्रु की हाथियों की सेना पर आक्रमण करके अपने भाले से शत्रु सेना को पीछे हटाया इस युद्ध में कुशल सिंह के 50 सैनिक धाराशायी हुए।7

हरौलय हूंत हरोल हठाल, तठे कुसलेस वधे रिणताल।

धरा बल क्रोध ओरे धजराज, जिसी विध सामद बीच जिहाज ॥ 150 ॥

सिल्हे धर बेधत वाहत सेल, खेलै जिम हौलिय फागण खेल।

सांमा खल आवत वीजल साहि, मिलै जिम सोर उड़ै झल मांहि ॥ 151 ॥

चढ़ै खल हीक तुरी उर चोट, कालाहल झूंस हुवै व्रज कोट ।

सैलाल जरद्-मरद् सकाज, वेधे वज भाखर पोखर वाज ॥152 ॥

लोही धखाधक्क वभक्कत लाल, पडै धर जांणि पतंग पखाल।

गोलां जिम ढ़ाहि, खलां गजगाहि, वधे जुध कीधं गजां सिर वाहि॥153॥

कूंभाथल बेधि कढ़ै धज कूंत, हौदां मझि मीर हणै खगहूंत।

कैर इम नाथ तणौ कुसलेस, बड़े परमांण अनै लघुवेस ॥154॥8

मारवाड़ महाराजा विजय सिंह के समय जैतसिंह आहुवा महत्वपूर्ण जागीरदार थे। जैतसिंह के यशोगान में यह दोहा सामान्य जन में प्रचलन में है

जैत अमे भगवान जिये, पूगे मह दल पास।

मरहठ्ठा मन मायंनै,है जीतन री आस ॥ 9

मारवाड़ महाराजा विजयसिंह के समय मराठा फ्रांसीसी सेनापति डिवाइने के नेतृत्व में मारवाड़ में संघर्ष हुआ। इसमें आहुवा के शिवसिंह जी चाम्पावत और महेशदास जी कूम्पावत की वीरता एवं शौर्य के दोहे ठाकूर नाहरसिंह जी ने रचे हैं। यथा

मरहठां सूं रण मड़े, बणियौ बनड़े वेस।

आसौप अनै आऊवै, मिल सिव औस महेस।।

मंड अरियां संग मेड़तै, लोभ न तन किये लेस।

सिव पड़ियौ घावां समर, मर गो सुरस महेस।।

चार वार दिखणी चमूं, तनां खार धर तेस।

लेगा ठेल छः कोस लग, मंड सिव वीर महेस॥

खग अस खड़ धस खेत में, रण रस रिपु दे रेस।

वीरा रसमन वस वचन, मर जस लियो महेस॥

खाग भाड़ खड़ खैग खल, पाड किया धर पेस।

तोड़ बाड़ तोपां तणी, मांडी राड़ महेस॥ 10

मारवाड़ महाराजा मानसिंह ने माधवसिंह आहुवा को पूर्व में जब्त जागीर, आहुवा पुनः वापस लौटाई साथ ही बालोतरा जागीर बहाल कर, आहुवा किले के मरम्मत के लिए 20,000/- रूपये दिये और एक हाथी भी दिया॥ महाराजा मानसिंह जी ने माधव सिंह आहुवा की सेवाओं प्रसन्न होकर गीत लिखा॥

गीत प्रहार साणौर

अभंग झोक अकाय रण टला रा दियण अत, वसू कज सला रा करण वारू।

सिवा रा सुतण खग झला रा साहसी, 'मधा' रंग भला रा लियण मारू ॥ 1 ॥

ग्रही मो बांह निज हाथ जाणै जगत, प्रसिद्ध कीरत हुई सिंधू पाजा ।

कहै आगालगो जगत सारी कथन, रिड़मला थपिया जिकै राजा ॥ 2 ॥

जां करां लिखांणा केई अंक जोस रा, प्रगट केई वार त्यां विरद पायो॥

जाणियौ मूझ दिल जगत अब जांणसी, आविया पत्र जोधाण आयो ॥ 3 ॥

तिलक निज परियां रा दूसरा तेजसी, झाट देणां अरयां काल झांपा॥

अभंग अगजीत देबल बड़ो आसती, चाढ़णो सुजस रो कलस चाम्पा ॥ 4 ॥11

मारवाड़ महाराजा मानसिंह ने ठा. बख्तावर सिंह आहुवा के समय, उसकी जागीर जब्त कर, कालूराम पंचैली को सेना सहित आहुवा भेजा, पर उसे तनिक भी सफलता प्राप्त नही हुई॥ इस घटना का कवि जवान आढा ने इस गीत में बखान किया हैं॥

छूटी देस देसां हवाई तवाई पड़ी छत्रधारां,

घड़ी पातसाई सीस सवाई धैधींग॥

लाखं बखतैस भूप मान री भराई तोपां

जिके खाली कराई बिजाई जैतसिंग ॥ 1 ॥

तोड़ भैसां छल्लारै ललाई जलाबोल ताबै,

अयांस जलाई भलै भल्लारै उमंग ।

जोर राजा टल्लारै टलाई नीठ नीठ जिकै,

आवासां किल्लारै सीस बलाई अभंग ॥ 2 ॥

लाग वीर तालिया अच्छरां आंधतरां लूंब,

झड़ै चन्द्रहासां सूरां बालिया जरूर ।

आईदान दूजा सोर झालियां लगाई आभ,

पाई फतै नालियां गजाई बरापूर ॥ 3 ॥

ऊभां ठहे चैसरां तणावै माधौसिंघ वालौ,

फेर फौजां आपाण, जणावै फुलां फेर।

तमाम नगार बंधां नूंतों अणावै तोपां,

आऊवौ आप ज्यू भलां वणावै आसेर ॥ 4 ॥12

1857 की क्रांति के समय आहुवा के ठाकुर कुशाल सिंह जी की स्वतंत्रता प्रेम, आत्माभिमान, साहस एवं शौर्य का ओजपूर्ण बखान इस गीत में किया गया हैं।

फतै पाई जंगा धकाई पातसाही फौजां,

उग्रताई पीढी-पीढी दिखाई आरोड़।

चित ऊंचे क्रीत जांदा लेणं वाली राव चांपा,

रीत बाप दादा वाली चूकौ नीं राठौड़ ॥ 1 ॥

भड़ा जोधां नैसरा मुकटां मणी बांध भूरा,

पगां गलां खतगी रीधू रा सिंधा पार ।

साहसिक जाड़े भाग जाणियो जिहान सिंभू

आड़ै अंक मारूं चंपै आणियो आभार ॥ 2 ॥

नवां कोटां नाथरां सुभड़ा घोटा आपनांमी,

वामी बंध लाखां पात आथ रा बरीस ।

ठिकाणे पाटवी चांपा पाथरा प्रवाड़ा ठावौ,

धरा चावौ दानी कहा तरां सुरां धींग ॥ 3 ॥

चालागारा भूपाला ऊपरमाला मेर चम्पा,

उजालां दौपकां ढाला, बिरद्दा अमांम।

आऊवो आचारसार, सदा जिहान सू ऊंचो

तवां आऊवां सू नीची जिहानां तमाम ॥ 4 ॥ 13

कुशाल सिंह आऊवा के साहस और अंग्रेजा से लोहा लेना, राजस्थान के लोकमानस में आज भी होलिकोत्सव पर गांव-गावं में चंग और ढफ वाद्ययंत्रों के स्वर में गूंजते हैं: - सुनिए इन धमालो में –

अे! वाणियावाली गोचर माय, कालो लोग पड़ियो ओ।

अे! राजाजी रे भेलो तो फिंरगी लड़ियोओ काली टोपी रो ॥

अे! बारली तोपां रा गोला लाड़गढ़ में लागे ओ ।

अे! मायली तोपां रा गोला तम्बू तोड़े ओ, झल्लै आऊवौ।

हे ओ झल्ले आऊवौ, आऊवो तो धरती रो थाम्भो ओ झल्ले आऊवो।

अे, मायली तोपां तो छूटे आड़ौवलो धूजै ओ॥

अे! आऊवो रा नाथ तो सूगाली पूजै ओ, झगड़ो आदिरयो।

हे ओ झगड़ो आदिरयो आऊवो झगड़ा में बांकीओ झगड़ो आदिरयो॥

अे! राजाजी रा घोड़लिया कालां रे लारै दौड़े ओ।

आऊवे रा घोड़ा तो पछाड़ी तोड़े औ झगड़ो व्हैण दो॥ 14

धमाल

ढोल बाजे चंग बाजे भेलो बाजे बाकियो।

एजेन्ट ने मार दरवाजे टांकियो॥

जूंझे आऊवो। ते ओ जूंझे आऊवो।

मुल्क में ढावो हियो आऊवो॥ 15

दोहा

घर बैठा अनमी घणां, रहै बिया राजांन।

सांचै अनमी बखत सुत, जाण्यौ सरब जेहांन॥

अई अंग्रेजी आऊवा, मुणू भरतपुर मीढं।

कर सक्कै थांरी कवण, अवर ठिकाना ईढ़ा।। 16

कुशाल सिंह जी के देहांत के बाद देवी सिंह जी ने अनवरत प्रयास कर आहुवा जागीर (आहुवा नाथ/इज्जत का सवाल) पुनः प्राप्त की। इसी प्रयास की अभिव्यक्ति कवि मोड़दान आशिया की रचनाओं से होती है। यथा

दोहा

अड़वा चांपा आप सूं, सिंघ हुआ था स्याल।

यां सूं लै केवा अबै, देबा कर देखाल।।

कर साबत देवा कमंध, औ आदू ओखाण।

धरती रा चांपा धणी, काय धणी जोधाण।।

रेणा अर सावत रहै, तौ हूंता कर तोट।

तौ लजै खुसियालसण, कुसल आऊवो कोट।। 17

इसी वंश परम्परा में ठाकुर नाहर सिंह जी आहुवा राजस्थानी साहित्य की डिंगल विद्या के उत्कृष्ट कवि हुए। उनकी साहित्यिक कृति ''नाहर रचनावली'' है जिसमें दोहा, सोरठा, कवित्त, छिप्पय, गीत, भजन एवं मरसीय रचित हैं। उनकी काव्य रचना की विषय वस्तु राधा कृष्ण प्रेम एवं भक्ति था। यथा

कवि हूँ राधा कृष्ण रो, रच काव्य रीझाऊँह।

करजो नाहर पर कृपा, प्रेम भाव पऊँह।।

कवि राधा माधव कियो, गिरा सुजस गाऊँह।

नाहर लीला प्रेम नित, धणियाँ मिल धाऊँह।।

राधा कृष्ण विनती राखो, उर नाहर री याद।

माचण चोमासो मही, वेवण दो वरसाद।। 18

ठा. नाहरसिंह आऊवा ने अपने पूर्वज कुशाल सिंह के सुजस शौर्य एवं कीर्ति के बखान में दोहे रचित किये। यथा

अँगरेजाँ आऊवे, दल चढ़ आया दूठ।

किरिया जुध कुसियाल सूँ, पाछी फेरी पूठ।।

कुसियाले चायो करण, स्वतंत्र देस ने सूर।

हद लड़ियो जिणरो हुवो, पर मुलकाँ जस पूर।।

अण भारत सरकार अब, जाँच कदर की जोय।

उणरो स्मारक आऊवे, हमे रयो है होय।।

बरस एक सो बीतगा, कीरत मिटी न काय।

सामिल उतसव सज्जनाँ, आऊवे वो आय।।

जनता युत नाहर जपे, आहूवा सूँ आज।

सेणाँ आय सुधार दो, कोड़ गुणो ओ काज।।

कुसाल गोरा सूँ कियो, स्वतंत्र हित संग्राम।

इल पर वेगो आऊवो, नाहर चाहवो नाम।। 19

इस प्रकार लोक साहित्य में रचित आहुवा का यश, शौर्य, कीर्ति, पुरूषार्थ, साहस, वीरता एवं स्वाभिमान इत्यादि इसके इतिहास को उज्ज्वल, गौरवमयी एवं जीवंत बनाता हैं। जिससे जन सामान्य गर्वित महसुस होता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची :-

1. रेऊ विश्वेश्वरनाथ, मारवाड़ का इतिहास भाग-1 पृ. 05 (प्राक्कथन)
2. कानोता, ठाकुर मोहन सिंह चांपावतो का इतिहास भाग-1 पृष्ठ सं. 83
3. दासपा का इतिहास पृष्ठ संख्या-24
4. मुरारी दान, राठौड़ों की ख्यात पृष्ठ-126, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर।
5. सामौर, भंवर सिंह ''आउवा का धरना'' पृष्ठ संख्या 32-33
6. चांपावतों की ख्यात फाइल नंबर 27/101 पृ. सं. 32-33
7. राज रूपक, चतुर चत्वारिश प्रकाश पृ. 719 छंद 45, पृ. 776 छंद 343
8. करणी दान, सूरज प्रकाश भाग 3 पृ. 50-51
9. चांपावत चिंतामणी।
10. शेखावत,सौभाग्य सिंह "भगतपुरा का संग्रह''
11. महाराजा मानसिंह जोधपुर रचित गीत

12.शेखावत सौभाग्य सिंह (सं.) राजस्थानी वीर गीत संग्रह भाग 4 पृष्ठ 69

13.गोटा हज जा

14.भाटी अचल सिंह, क्षत्रिय दर्शन पत्रिका अंक 9 वर्ष, पृ- 7-8

15.कनोता मोहन सिंह, चांपावतों का इतिहास भाग 3 पृ-705

16.शेखावत सौभाग्य सिंह, भगतपुरा (खूड़) के संग्रह से प्राप्त

17.कानोता ठाकुर मोहन सिंह, चांपावतों का इतिहास भाग 3 पृ-709

18.आहुवा ठाकुर नाहर सिंह, ''नाहर रत्नावली'' पृष्ठ संख्या 77

19.आहुआ ठाकुर नाहर सिंह, ''नाहर रत्नावली'' पृष्ठ संख्या 295-296